International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-09-2021, Accepted: 16-09-2021, Published: 30-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 66-67

रामधारी सिंह दिवाकर और ग्रामीण संस्कृति

निषा देवी
पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जम्मू विष्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर, भारत

सारांश
प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति जगत् में वंदनीय रही है। उसमें विविधता और अनेकता होते हुए भी एकता पाई जाती है। ग्रामीण संस्कृति का मार्धुय सम्बन्ध सामाजिक पहचान को निरंतर बनाये रखता है। गांव में तीज, त्यौहार, पर्व आदि से मनुष्य में रागात्मक लगाव की निर्मिति होती है। गांव को ही एकता का सूत्र माना जाता है। रामधारी सिंह दिवाकर की पहचान ऐसे रचनाकर के रूप में है, जिसके केन्द्र में प्रमुख रूप से गांव रहे हैं। वह संपूर्ण रूप से गांव की संस्कृति से जुड़े हुए हैं। जिसका चित्रण उन्होंने 'मखान पोखर' कहानी संग्रह की कहानियों में किया है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में पात्रों का अपनी संस्कृति तथा गांव के साथ आत्मिक लगाव को दर्षाया गया है। गांव से दूर रहने के कारण भी वह अपने गांव को भूला नही पाए हैं। शहरी सुख सुविधाओं के रहते हुए भी वह हर पल गांव की माटी की सुगन्ध, वहां के पर्यावरण को अपने समीप ही महसूस करते हैं। आधुनिक समय में व्यक्ति अपने गांव से भले ही दूर हुआ है। परन्तु कहीं न कहीं वह अभी भी गांव से जुड़ा हुआ है। वह गांव के रीति रिवाजों, वहां की परम्परा को भुला कर आगे नही बढ़ पाता है। शहरी चकाचौंध में वह गांव जैसे जीवन को नहीं जी पाते हैं। इसी कारण वह वापिस गांव में आने के लिए व्याकुल है।

मूलशब्दः आत्मिक, पर्यावरण, मार्धुय, वंदनीय, रागात्मक, सुगन्ध, निर्मिति।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति जगत् में वंदनीय रही है। उसमें विविधता और अनेकता होते हुए भी एकता पाई जाती है। हिन्दुस्तान के अनदेखे अंचलों में भारतीय संस्कृति मूलतः एक होते हुए भी बिखरी हुई है। लोकगीतों और लोककथाओं का संबंध भारतीय लोगों के अंतस से रहा है। मांगलिक और सांस्कृतिक अवसर गाँव को भीतर से जोड़ते हैं। ग्रामीण का अर्थ गाँव सम्बन्धी तथा संस्कृति का अर्थ – "संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता तथा चौबीस वर्णों के वृत्तों की संख्या आदि है।"[1] ग्रामीण संस्कृति का माधुर्य सामाजिक पहचान को निरंतर बनाये रखता है। तीज, त्योहार, पर्व आदि से मनुष्य में रागात्मक लगाव की निर्मिति होती है। भारतीय संस्कृति में ग्राम्य जीवन कृषक संस्कृति से संबंधित रहा है। गांव की संस्कृति में एक–दूसरे के प्रति दुष्मनी की भावना कम होती है। ग्रामों में संस्कृति में स्थिरता पाई जाती है। साथ ही परिवर्तन का अभाव रहता है। स्थिर संस्कृति के कारण रूढ़िवादिता की भावना उत्पन्न होती है। ग्रामों में परम्परा की पूजा होती है। ग्रामीण व्यवहार परम्परा से ही निर्धारित होते हैं। विवाहादि कार्यों पर सारा गांव इकट्ठा होता है। सभी अपने घर का काम का समझकर कार्यरत होते हैं। नारियाँ गीत गाती थकती नहीं हैं। रस्म–रिवाज, शकुन–अपषकुन, अंधविष्वास आदि ग्रामांचलिक संस्कृति के अविभाज्य अंग हैं। रामधारी सिंह दिवाकर की पहचान ऐसे रचनाकार के रूप में है जिनकी कहानियों के केन्द्र में मुख्य रूप से गांव रहे हैं।

1 जनवरी 1945 ई. को दिवाकर जी का जन्म एक निम्न मध्यवर्गीय किसान परिवार में हुआ। इन्होंने आरम्भिक षिक्षा गांव के विद्यालयों में की। फारबिसगंज कॉलेज मुजफ्फरपुर से बी.ए. आनर्स (हिन्दी), भागलपुर विष्वविद्यालीय से हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी. की। अपनी इच्छित नौकरी कॉलेज की प्रध्यापकी 1979 ई. से करते रहे। दिवाकर जी की प्रध्यापकी वृति का आरंभ होता है कोसी कछार के गाँवनुमा छोटे से कस्बे निर्मली से। वहाँ पर रहकर भी इन्होंने गाँव को खूब जाना तथा वहाँ की खूबी–खामियों को अपने अनुभव में सहजते रहे।

रामधारी सिंह दिवाकर जी का अधिकांष जीवन गाँव में ही बीता इसी कारण वह गांव को बड़ी बारीकी से जान और लिख पाए। गांव की संस्कृति से वह भली–भांति परिचित हैं, इसीलिए संस्कृति के प्रति अपने दायित्व को बखूबी निभाते हैं। जिसका चित्रण इनकी रचनाओं में भी मिलता है। आंचलिकता आज हिन्दी कहानी में चर्चित होने का सर्वाधिक सफल और सहज साधन है। आंचलिकता का मोटा–मोटा अर्थ जो हिंदी कहानियों में समझा जाता है वह किसी क्षेत्रीय की बहुलता और कुछेक अबूझ से शब्दों का प्रयोग है। हमने दसियों बरस से गांव भले ही न देखा हो, वहां के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों से भले ही अनजान हों यदि वहां के कुछेक शब्द और मुहावरे याद हों तो बैठे–बिठाए एक आंचलिक कहानी तैयार कर ली जा सकती है। यही कारण है कि हिंदी कहानियों में ऐसा संयोग दुर्लभ ही दिखता है कि कोई खास अंचल अपने पूरे वजूद में पूरे सांस्कृतिक परिवेष में उभरकर सामने आ सके। यह दुर्लभ संयोग दिखता है, वरिष्ठ कथाकार रामधारी सिंह दिवाकर के संघ प्रकाषित कथा–संग्रह 'मखान–पोखर' में। विवेच्य संग्रह की संकलित कहानियों मं मिथिलांचल अपनी पूरी गरिमा के साथ मौजूद है, और इतने विस्तार के साथ कि मिथिलांचल की सांस्कृतिक गाथा तैयार की जा सकती है। प्रस्तुत कहानियों से गुजरते हुए मिथिलांचल की सांस्कृतिक परंपराएं, लोकगाथाएं, लोकगीतों से रू–ब–रू हुआ जा सकता है।

विवेच्य कहानी संग्रह की 'पुनरागमन'कहानी में पात्र द्वारा गांव की संस्कृति का वर्णन मिलता है – "चैत महीने में ही गाँव की सुख रही नदी के कारुणिक वर्तमान को देखता वह उन्नीस–बीस वर्ष पहले की उस नदी पर सोच रहा था जिस नदी पर बांध नहीं था। निर्बन्ध–स्वच्छन्द थी नदी। तब बरसाती महीनों में बाढ़ आती थी इस नदी मे, खेत खलिहान और कभी–कभी तो गांव के गांव डूबने लगते थे।"[2] प्रस्तुत कहानी का पात्र अब गांव से दूर है, जिस कारण वह अपने गांव और वहां की प्रकृति के साथ अभी तक जुड़ा हुआ है। परन्तु जब वह गांव की तरफ वापिस मुड़ना चाहता है तो पुनः उसे प्रकृति का चित्रण स्पष्ट रूप में दिखाई देता है – "नदी की पतली–सी जलधारा पर सांझ की स्याही छाली की तरह फैलने लगी है।"[3] विवेच्य कहानी के मुख्य पात्र को अपने गांव पर सोचते ही प्रकृति के भी सुन्दर चित्र दिखाई देने लगते हैं।

'आखिरी पीढ़ी' कहानी के अन्तर्गत भी गांव की संस्कृति का चित्रण मिलता है। रचनाकार जो अभी अपने गांव से दूर हो चुका है, परन्तु आज भी उसकी रचनाओं में गांव तथा वहां की प्रकृति का चित्रण मिलता है। गांव में अब रचनाकार के बेटे आए हैं, जो वह अपने पिता की रचनाओं में पढ़ते हैं आज वह उससे रू–ब–रू देख रहे हैं – "गांव की नदी है न। उसका फोटो लिया है। नदी में एक नाव थी। ... और लोटस पौंड है न वो। क्या कहते हैं उसको? हां, कमल–पोखर ... उसका भी फोटो लिया है और ऐसी ही कुछ दूसरी चीजों का।"[4] विवेच्य कहानी में रचनाकार गांव से दूर जाकर शहर में बस गया है, परन्तु

उसकी कृतियों में गांव तथा वहां की प्रवृति और संस्कृति अपने पूरे अस्तित्व के साथ मौजूद है।

ऐसी ही कहानी है 'सूखी नदी का पुल' जिसकी पात्रा लीलावती थी तो गांव की, परन्तु आज मुम्बई से वापिस गांव आई है, और वह आज भी अपने गांव और गांव की संस्कृति को भूल नहीं पाई है। मुम्बई में यहां सब सुख–सुविधाओं के होते हुए भी गांव के लिए तरसती हुई नज़र आती है। जिसका वर्णन लीलावती की इन पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट होता है – "मैं तो गाँव की, अपने नैहर की असुविधाओं के लिए ही तरसती हूँ। गांव की सखी–सहेलियां, टोले–टोले में बिखरे और भूले हुए संबंध नाथ बाबा का मंदिर, बरम बाबा का गह्वर, भुवना झील में दूर–दूर के देषों से उड़कर आने वाले तरह–तरह के जल–पक्षी ... गांव की नदी ...।"[5] शहर में रहकर भी गांव की सुख–सुविधाओं के लिए न सिर्फ तरसती है, बल्कि उसे खोजती भी है। आधुनिक शहरी सुविधाओं के बीच भी वह गांव की स्मृतियों को भुला नहीं पाती है। लीलावती को गांव की प्रत्येक वस्तु से अत्यधिक स्नेह था। गांव की सुन्दरता का प्रतीक होता है कमल पोखर। परन्तु कमल पोखर की खराब दषा देखकर उसे बिल्कुल असहज महसूस हो रहा था – "एकदम सुनसान था कमल पोखर। चारों तरफ जंगली झाड़ियां और सघन वृक्षों की बेतरतीब कतारें थीं।"[6] लीलावती न तो अपने गांव को भूला पा रही थी और न ही वहां की प्रत्येक वस्तु को।

प्रस्तुत कहानी में गांव के विवाह का वर्णन भी मिलता है कि कैसे सारी औरतें रात–भर गीत गाती हैं। जिनमें "सारी रात लीलवाती औरतों के झुंड में वर्षों पीछे के भूले हुए विवाह–गीत गाती रही।"[7] विवेच्य कहानी में लीलावती न तो गांव को भूली है न ही वहां के रीति–रिवाजों को वह आज भी उसकी स्मृति के मुख्य विषय के रूप में सामने आते हैं।

रामधारी सिंह दिवाकर ने प्रस्तुत कहानी संग्रह में ग्रामीण संवदेना एवं सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति पर विषेष बल दिया है। वह सामाजिक जीवन प्रणाली को अपनी कहानी का विषय बनाकर पाठकों को यथार्थ से रू–ब–रू कराते हैं। दिवाकर जी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को बचाने वाले कथाकार हैं। ग्रामीण जीवन की मर्यादा, संस्कारगत आचरण एवं सांस्कृतिक मूल्यों को समेटती इनकी कहानियां भारतीय ग्रामीण जीवन का दस्तावेज है। जीवन मूल्य एवं ग्रामीण जीवन की मर्यादा समेटती 'मखान मोखर' की दुलरिया समस्त भारतीय नारी की विषेषता को अपने आप में समाए हुए है। जीवन संग्राम में न जाने कितने संघर्ष और पीड़ा से गुजरने के बाद भी दुलरिया अपनी भारतीय पहचान और मर्यादा नहीं खोती है। सांस्कृतिक मूल्य को बचाती हुई दुलारिया ने हाथ नचा कर कहा था – "अरे तुम क्या समझोगी भौजी। मेरा मरद था तो देवी की तरह पूजता था, समझी? देवी थी मैं उसके लिए। चार बरस का ही सुख रहा तो क्या। तुम अपनी जिंदगी भर का सुख जोड़कर पासंग में भी नहीं आओगी, समझी? बड़की भौजी 'हूँह' की आवाज निकाल कर वहाँ से हट गई थी।"[8]

प्रस्तुत कहानी में दुलरिया पति की मृत्यु के पष्चात् पति के साथ बिताए गए चार वर्षों की सुखद अनुभूति को ही अपने जीवन का आधार मान कर बैठी है। उसके लिए दूसरी शादी जैसा कोई विकल्प ही नहीं है। वह जीवन भर पति की उन स्मृतियों के साथ रहना चाहती है। दुलरिया के माध्यम से भारतीय नारी का चरित्र उपस्थित होता है। वह पारिवारिक सामाजिक यातना सहते हुए भी कभी विचलित नहीं होती। वह आक्रोष और नफरत भरे दिल में प्रेम की गंगा अपने कर्मों से बहाने का काम करती है और जीवन की आखिरी साँस तक लड़ती है। परन्तु अपनी परंपरा, मर्यादा तथा संस्कृति को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ती है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियों में गांव की संस्कृति को पूरी प्रमाणिकता से देखा जा सकता है। कहानियों के पात्र गांव से दूर होते हुए भी गांव तथा वहां की संस्कृति से पूरी तरह जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। शहरों में हर सुविधा के होते हुए भी वह आज भी गांव की संस्कृति को भूल नहीं पाते हैं। गांव की संस्कृति ही आपस में सबको जोड़कर रखती है। भारतीय संस्कृति विभिन्न रूपों में गांवों में दिखायी देती है। मानव और संस्कृति एक–दूसरे से अभिन्न है। सच मानें तो संस्कृति के रक्षक और संवाहक ग्रामीण वासी ही रहे हैं। ग्रामांचलिक संस्कृति का चित्रण प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में प्रमाणिकता के साथ हुआ है।

संदर्भ

1. आदर्ष हिन्दी शब्द कोष, पृ. 760
2. रामधारी सिंह दिवाकर, मखान पोखर, पृ. 9
3. वही, वही, पृ. 10
4. वही, वही, पृ. 19
5. वही, वही, पृ. 118
6. वही, वही, पृ. 121
7. वही, वही, पृ. 123
8. वही, वही, पृ. 69